

---

.. Venkateshanidhyanam ..

॥ श्रीवेङ्कटेशनिध्यानम् ॥

Document Information



---

Text title : veNkaTeshanidhyAnam  
File name : venkaTeshanidhyAnam.itx  
Location : doc\_vishhnu  
Language : Sanskrit  
Subject : philosophy/hinduism/religion  
Transliterated by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy  
at yahoo.com  
Proofread by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at ya-  
hoo.com  
Source : Venkatesha Kavyakalapa  
Latest update : April 4, 2015  
Send corrections to : sanskrit@cheerful.com  
Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---


Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

August 3, 2016

*sanskritdocuments.org*

---



## ॥ श्रीवेङ्कटेशनिध्यानम् ॥

ईशानां जगतोऽस्य वेङ्कटपतेर्विष्णोः परां प्रेयसीं  
तद्वक्षस्स्थलनित्यवासरसिकां तत्क्षान्तिसंवर्धिनीम् ।  
पद्मालङ्कृतपाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियं  
वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम् ॥ १ ॥

श्रीवेङ्कटेशदयितां श्रियं घटकभावतः ।  
समाश्रित्य वृषाद्रीशचरणौ शरणं श्रये ॥ २ ॥

श्रीमन् शेषगिरीश ते पदयुगे मञ्जीरसंराजिते  
सक्तं मानसमस्तु मे तव शुभे जङ्घे सुजान्वञ्चिते ।  
रम्भाकान्तिहरोरुकाण्डयुगलीं प्राप्तं कटीं सेवते  
काञ्चीनूपुरकिङ्किणीपरिचितां पीताम्बरालङ्कृताम् ॥ ३ ॥

नाभीपङ्कजतुन्दबन्धनलसद्विव्योदरापाश्रयं  
पद्माकौस्तुभहारमाल्यसुभगां वक्षस्स्थलीं गाहते ।  
सर्वाभीष्टवरप्रदानकटिबन्धाजाग्र्यचक्रोज्ज्वलैः  
हस्तैः श्लिष्टमनल्पभूषणयुतैः कण्ठं समालम्बते ॥ ४ ॥

मुक्तारत्नविराजिकुण्डललसद्गण्डं सुबिम्बाधरं  
नासाशोभि दयाद्रलोचनयुगं सुभ्रूर्ध्वपुण्ड्रोज्ज्वलम् ।  
वक्त्रं रत्नललाटिकापरिलसत्फालं सतृष्णं पिबत्  
मौलौ रज्जति माल्यशोभिनि महारत्नाभिषेकोज्ज्वले ॥ ५ ॥

भूयो वक्त्रमनुप्रसर्पति ततः कण्ठावसक्तं भुजैः  
श्लिष्टं वक्षसि पद्मया परिचिते लग्नं पुनर्मध्यमम् ।  
कट्यूरुद्वयजानुषु प्रविततं जङ्घावसक्तं पदोः ।  
प्राप्तं तिष्ठति तत्र गात्रसुषमासक्तं वृषाद्रीश ते ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीवेङ्कटेशनिध्यानम् ॥

Encoded and proofread by Malleswara Rao Yellapragada  
malleswararaoy at yahoo.com  
From a telugu book veNkaTeshakAvyakalApa

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

